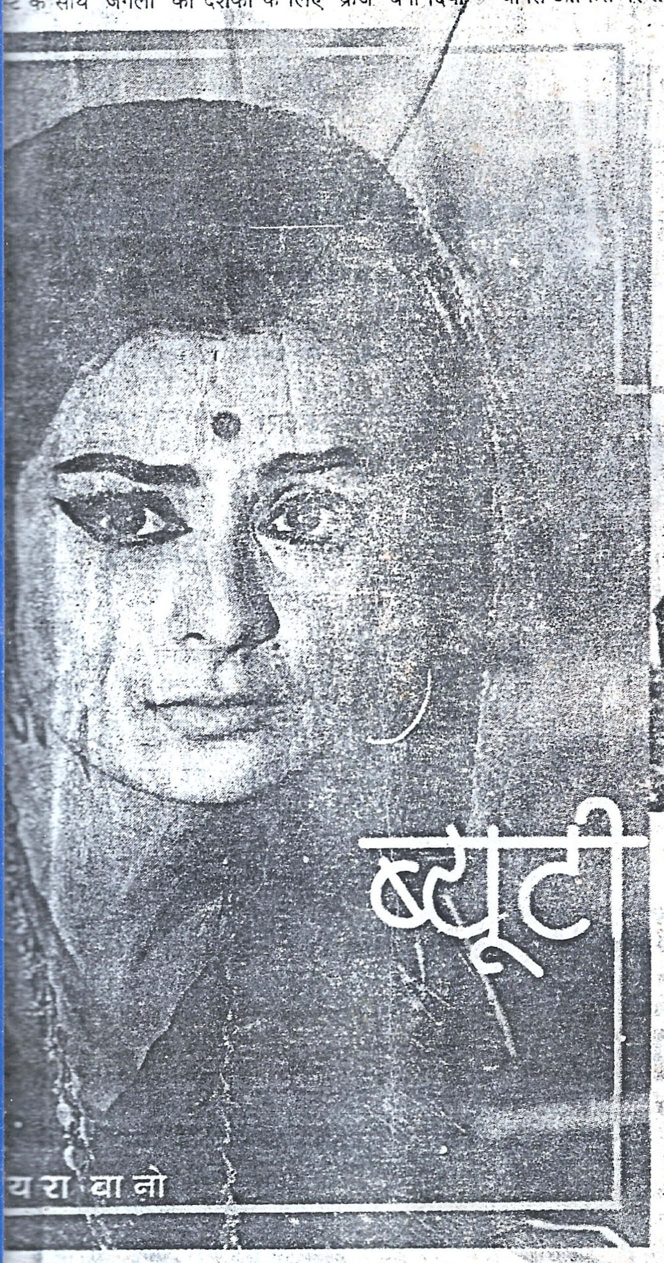
ब्यूटी क्वीन पड़ोसन



(सा)यरा बानो



(सन्) 1961 में फिल्म 'जंगली' से अपना अभिनय सफर आरंभ (क)रने वाली नई अभिनेत्री सायरा बानो को 'ब्यूटी क्वीन' के (प्र)चाव से इस कदर प्रचारित किया गया कि दर्शक इस सौंदर्य (को) देखने के लिए व्यग्र हो उठे। 'जंगली' में सायरा बानो के (हीरो) के रूप में स्टार शम्मी कपूर थे। उन दिनों शम्मी कपूर के (बारे में मश)हूर था कि वह जिस नई अभिनेत्री के साथ हीरो बनकर (आते, वह) स्टार बन जाती है। ओपी नैय्यर के कर्णप्रिय गीत-संगीत (के सपो)र्ट के साथ 'जंगली' को दर्शकों के लिए 'क्रेज' बना दिया।

(...)' के सुपर हिट होने के साथ ही मेरा कैरियर भी चमकने (लगा।' सायरा) बानो अपने सुनहरे अतीत के पन्नों को उलटते हुए बताती (हैं- '...)' के बाद मुझे इंडस्ट्री के सभी बड़े निर्माता-निर्देशक अपनी (फिल्मों में ले)ना चाहते थे, किंतु मैंने तय कर लिया था कि मैं केवल (बड़े निर्माता)-निर्देशकों की फिल्में ही करूंगी और अभिनेत्री के रूप में (अपनी गरिमा) बनाए रखूंगी।' इसी संकल्प के कारण ही संभवतः सायरा (ने ...) दर्जन फिल्मों के प्रस्तावों में से केवल दो फिल्में स्वीकार (कीं। एक) 'ब्लफ मास्टर' और दूसरी 'अप्रैल फूल'। 'अप्रैल फूल' (की कहानी) और अपनी भूमिका मुझे कमजोर महसूस हो रही थी। मैं (यह फिल्म) करना ही नहीं चाहती थी। किंतु मुझे यह फिल्म इसलिए करनी पड़ी, क्योंकि इस फिल्म का प्रस्ताव निर्माता सुबोध मुखर्जी की ओर से आया था। उन्हीं सुबोध मुखर्जी की ओर से, जिन्होंने मुझे 'जंगली' में 'ब्रेक' दिया था। मैं उनके प्रस्ताव को नहीं ठुकरा सकती थी।' किंतु भाग्य की देवी भी उस समय सौंदर्य की देवी पर मेहरबान थी। जिस फिल्म की कहानी और अपनी भूमिका को सायरा बानो ने कमजोर समझा, वही फिल्म 'अप्रैल फूल' भी 'जंगली' के बाद 'सिल्वर जुबिली' साबित हुई। उधर 1963 में 'ब्लफ मास्टर' ने बॉक्स ऑफिस पर सफलता के झंडे गाड़ दिए। 'शम्मी कपूर के मटकी वाले डांस 'गोविंदा आला रे' ने न केवल लोकप्रियता की सीमाएं तोड़ दीं, बल्कि एक इतिहास ही रच दिया। यह गीत आज भी गणपति उत्सवों में उतना ही लोकप्रिय है, जितना चालीस साल पहले था। 'ब्लफ मास्टर' और 'अप्रैल फूल' के बाद तो कैरियर सही मोड़ लेता गया और पंद्रह साल तक फिर फुर्सत ही न मिली।' सायरा बानो प्रसन्नता से बताती हैं- 'मैंने उन्नीस वर्षों तक फिल्मों में काम किया और कभी भी ऐसी फिल्में नहीं कीं, जो कि स्तरहीन या व्यर्थ हों।' वास्तव में सायरा बानो एक अभिनेत्री के रूप में संपूर्ण व्यक्तित्व रहीं। वह न केवल सचमुच की 'ब्यूटी क्वीन' थीं, बल्कि शारीरिक सौंदर्य के साथ-साथ प्रतिभासंपन्न भी थीं। अभिनय क्षमता के साथ-साथ सायरा नृत्य कला में भी पारंगत थीं। वह जितना कुशल और स्वाभाविक अभिनय गंभीर भूमिकाओं के लिए करने में समर्थ थीं, उतनी ही कुशलता से हास्यप्रधान भूमिकाएं भी कर सकती थीं। 'हमने अपने पूरे कैरियर में सिर्फ तीस फिल्में कीं। कम फिल्में कीं, किंतु अच्छी फिल्में कीं। हर प्रकार की फिल्मों में काम (किया। ...) 'आदमी' और 'पड़ोसन' जैसी यादगार कॉमेडी फिल्म भी कीं और 'चैताली', 'रेशम की डोरी', 'पैसे की गुड़िया' जैसी गंभीर फिल्में भी कीं। 'नहले पे दहला', 'विक्टोरिया नंबर 203', 'पूरब और पश्चिम' जैसी फिल्में भी कीं।

गुज़रा ज़माना

सायरा बानो का कैरियर जब पूरे शबाब पर था और वह सचमुच स्टार बन चुकी थीं कि तभी उनका नाम राजेंद्र कुमार से जुड़ गया। राजेंद्र कुमार के साथ सायरा बानो ने 'आई मिलन की बेला' से लेकर 'झुक गया आसमां' और 'अमन' तक कई फिल्में कीं। फिल्म 'अमन' अपने दौर की बहुत ही बड़ी फिल्म थी।

इस फिल्म के एक प्रसिद्ध गीत 'आज की रात एक ऐसी रात' 'न्याग्रा फाल्स' पर जब फिल्माया गया तो राजेंद्र और सायरा बानो का रोमांस पूरे उफान पर था। इसी उफान का परिणाम था कि गाने की अंतिम पंक्तियां युगल स्वरों में गाते-गाते सायरा और राजेंद्र कुमार एक-दूसरे के आलिंगन में इस प्रकार बंध गए कि निर्देशक लेख टंडन के 'कट' कहने की आवाज 'न्याग्रा फाल्स' में डूब गई। काफी देर तक हीरो और हीरोइन एक-दूसरे की बांहों में बंधे रहे। किंतु यह प्रेम प्रकरण सुखद परिणति में न बदल सका, क्योंकि एक तो सायरा बानो के मुस्लिम परिवार को राजेंद्र कुमार का हिंदू होना पसंद न था और दूसरे राजेंद्र कुमार न केवल विवाहित थे, बल्कि पिता भी बन चुके थे। अंततः सायरा बानो का निकाह दिलीप कुमार से पढ़वा दिया गया और 21 साल की सायरा बानो 42 साल के दिलीप 'साहब' की बीवी बन गईं। हां, सायरा आज भी उन्हें साहब ही कहती हैं। 'साहब के साथ शादी मेरी जिंदगी की सबसे खूबसूरत घटना है, क्योंकि मैं साहब को बचपन से ही देखती आई थी और मेरे दिल में उनके लिए हमेशा एक खास और सम्माननीय जगह थी। जब मैंने साहब के साथ शादी का फैसला किया तो सबसे मुझे नकारात्मक बातें सुनने को मिलीं। मुझसे कहा गया कि उम्र का काफी फर्क है, यह शादी नहीं चल पाएगी। शादी के चक्कर में कैरियर भी बर्बाद हो जाएगा। किंतु मैंने इन बातों की जरा भी परवाह न की, क्योंकि साहब मुझे पर्दे पर एक्टर के रूप में भी अच्छे लगते थे और वास्तविक जिंदगी में इंसान के रूप में भी। इसीलिए मैंने शादी कर ली। लोगों ने जो कुछ कहा था, सब गलत साबित हुआ।' सायरा बानो ने शादी के बाद फिल्मों से लगभग संन्यास ही ले लिया था। दिलीप कुमार के साथ उन्होंने चार फिल्में 'सगीना', 'बैराग', 'गोपी' और 'पुकार' फिल्में की थीं। सायरा बानो की अंतिम फिल्म मनोज कुमार की 'पूरब और पश्चिम' थी।

'वास्तव में शादी के बाद मैं फिल्मों में काम नहीं करना चाहती थी। मेरी इच्छा थी कि अगर मैं शादी के बाद काम करूं भी तो केवल साहब के ही साथ, क्योंकि मेरी घरेलू जिम्मेदारियां भी बढ़ गयी थीं और फिल्मों के प्रति कोई खास लगाव भी नहीं रहा था। मुझे वैवाहिक जीवन में आनंद आने लगा था। आज भी मैं अपना जीवन भरपूर आनंद के साथ जीती हूं और जब कभी अवकाश मिलता है तो याद करती हूं अपने अभिनय जीवन की उन तस्वीरों को, जो सचमुच बहुत खूबसूरत थीं। हमेशा के लिए यादों में समेट कर रखने (...)' (सायरा बानो की) आंखें बंद कर (...) जाता है और साथ ही सुनहरी यादों के पन्नों को भी बंद कर देती हैं।

> वास्तव में सायरा बानो एक अभिनेत्री के रूप में संपूर्ण व्यक्तित्व रहीं। वह न केवल सचमुच की 'ब्यूटी क्वीन' थीं, बल्कि शारीरिक सौंदर्य के साथ-साथ प्रतिभासंपन्न भी थीं। अभिनय क्षमता के साथ-साथ सायरा नृत्य कला में भी पारंगत थीं...

■ नरेंद्र उपाध्याय